REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2018

ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर'जी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. मिरगणे अनुराधा जनार्दन

मॉरीशस के राष्ट्रकवि ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर' अपनी उत्कृष्ट हिन्दी रचनाओं के कारण न केवल मॉरिशस बल्कि भारत के साहित्यिक जगत में भी बहुत लोकप्रिय हैं। इनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति और हिन्दी साहित्य के प्रति असीम प्रेम और निष्ठा की गहरी छाप मिलती है।

भारत और मॉरीशस दोनों के बीच सांस्कृतिक तथा साहित्यिक आदान-प्रदान को निरन्तर बढावा देने में 'मधुकर' जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे उन रस सिध्द कवियों में से हैं जिन पर मॉरीशस को ही नहीं बल्कि भारत को भी गर्व है।

साहित्य का संस्कार और हिन्दी प्रेम तो उन्हें परिवार से ही मिला और काव्य रचना की प्रेरणा में देश की हिन्दी काव्य परम्परा ने अपना यागदान दिया। 'मधुकर' जी लगभग ६०-७० वर्षो तक हिन्दी एवं भोजपुरी कवि के रुप में हिन्दी साहित्यकारों में चमकते रहे। 'मधुकर' जी ने हिन्दी में गीत इसलिए लिखे ताकि प्रवासी भारतीयों में हिन्दी का आदर बना रहे। उनकी प्रबल इच्छा थी कि मॉरीशस के बच्चे और युवा इन्हें गाकर हिन्दी सीखें और अपनी मातृभूमि के प्रति सम्मान प्रर्दशित करें। कवि का यह राष्ट्र प्रेम ही वह बीज तत्व है जो काल प्रवाह के साथ वृक्ष बनता चला गया और कवि को 'राष्ट्रकवि' के पद तक पहुँचाया। 'मधुकर' जी की लम्बे समय तक निरंतर काव्य-साधना उनकी अद्‌भुत सर्वनात्मक क्षमता की प्रमाण है। वे अपनी इस काव्य साधना और हिन्दी-निष्ठा से ही 'इतिहास-पुरुष' बन जाते है। उनमें अपनी भाषा, कविता, संस्क्रृति और मानव मूल्यों के प्रति जो निष्ठा है, वह महाकवि की कोटि की है तथा उन्होंने अपनी काव्य सृष्टि में अस्तित्व, उच्च एवं उदात्त मूल्यों के प्रश्नों, समस्याओं तथा चुनौतियों को उठाया है, वह उनकी महाकाव्यात्मक चेतना का प्रमाण है।

'मधुकर' जी के काव्य संसार में 'हिन्दी-हिन्दी-हिन्दुस्तानी' के साथ 'मॉरीशस का इतिहास, स्वतंत्रता, एकता, समन्वय और विकास' की विषय वस्तु प्रमुख रही है। उनका यह कथन पूर्णतः सत्य है कि उनका शरीर मॉरीशस का है और आत्मा भारत की है। 'मधुकर' जी के विचार में भारत 'विशाल भारत' है और मॉरीशस 'लघु भारत' । उनकी कविता का प्रत्येक शब्द राष्ट्र और हिन्दू जागरण का बीज मंत्र है। 'मधुकर' जी को अपने जीवनकाल में ही मॉरीशस के 'राष्ट्रकवि' की प्रतिष्ठा मिल गयी, जैसे भारत में मैथिलीशरण गुप्त को मिली थी। वे हिन्दी और भेजपुरी उनकी मातृभाषा थी, परन्तु वे हिन्दी को भी मातृभाषा मानते है।

'मधुकर' जी अतीत, वर्तमान और भविष्य को जोडने वाले ऐसे हिन्दी के कवि बने जैसे भारत में मैथिलीशरण गुप्त बनें। इन दोनों ही कवियों ने अपने-अपने देश की पराधीनता, स्वतंत्रता और स्वतंत्रता के बाद के समय को देखा और अपने अनुभवों और संवेदनाओं को वाणी दी। इस अर्थ में 'मधुकर' जी को 'त्रिकाल-दर्शी' या 'त्रिकाल -साक्षी' अथवा 'त्रिकाल का गायक'कवि कहा जा सकता है।

मॉरीशस के राष्ट्रकवि ब्रजेंन्द कुमार भगत 'मधुकर' जी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न पक्षों को हम उनकी कविताओं में अलग-अलग रुपों में देख सकते है। हिन्दी के प्रति प्रेम को 'मधुपर्क' कविता संग्रह में 'हिन्दी पढो' कविता में देखा जा सकता है। कवि हिन्दी की महत्ता पर जोर देते हुए कहते हैं-

अब हिन्दी पढों रे भाई।
जो न पढोगे हिन्दी अभी से, जग में होगी हंसाई।।
सुन्दर सरल है हिन्दी हमारी, कितनी सरस है कितनी है प्यारी।।
मूख ऱ्हदय से गैरों की भाषा तुमने क्यों अपनाई?
हिन्दी बिना तुम वोटर न होगे, हिन्दी बिना तुम ठोकर सहोगे।
संकट तुम्हारे दूर न होंगे, कर न सकोगे कोई भलाई।।
हिन्दी अजर है, हिन्दी अमर है।
हिन्दी नगर में, हिन्दी डगर है।
हिन्दी शहर में करनी है सेवा, भले ही हो कठिनाई।।[१]

कवि 'मधुकर' जी हिन्दी से प्रेम करते है। वे मानते हैं कि

हिन्दी उनके पूर्वजों की भाषा है। वे अपनी कविताओं के माध्यम से सभी देशवासियों से आहवान करते हैं कि मॉरीशस में हिंदी विरोधी सक्रिय हैं। हिन्दी की महत्ता पर जोर देते हुए वे लिखते हैं कि-

सुनो सुनो हे हिन्दी प्रेमी हिंदी की यह अमर कहानी।
हिन्दी सरल, सलोनी सुंन्दर, है देवों की वाणी।।
दादा, बाप हमारे पूर्वज जब मॉरिशस में आये,
गीता, रामायण, पुराण के कुछ पाठ पढाये,
घर-घर में थे रामकृष्ण के सुन्दर गीत सुनाये,
हिन्दी ही उनकी भाषा थी सकल लोक – कल्याणी ।
सुनो, सुनो हे हिन्दी प्रेमी! हिन्दी की यह अमर कहानी ।।[२]

'मधुकर' जी के मन में जितना राष्ट्रप्रेम भारत देश के लिए था

उतना ही प्रेम मॉरीशस देश के प्रति भी था। कवि दोनों देशों को याद करता है। मॉरीशस के प्रति प्रेम व्यक्त करते हुए कहते हैं-

यह सुन्दर देश हमारा, है यह सुन्दर देश हमारा।
गिरि सरिता का उद्‌गम है यह सब देशों से न्यारा।।
नव जागृति की गीत सुनाता, नवल प्राण देता है।
है स्वर्गधाम से प्यारा, यह सुन्दर देश हमारा।[३]

राष्ट्रकवि ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर' जी का राष्ट्र के प्रति नवयुवकों में उत्साह का संचार करने वाला है। वे भारत देश को सभी देशों का सरताज मानते है। भारत देश के गौरव का गान करते हुए वे लिखते है-

दुनिया में सबसे प्यारा, सरताज देश हमारा।
जुगनू जहान सारा, वह गगन का तारा।
दु:ख से सदा बचाता, सन्मार्ग है दिखाता।।
है दासता मिटाता, सरताज देश हमारा।।[४]

'मधुकर' जी की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के स्वर मुखर होते दिखाई पडते हैंहै 'झण्डा गीत' कविता में देशवासियों को आजादी के गाद आपसी मतभेद भुलाकर आगे बढने का आहवान करता है। वे कहते हैं-

फहर रहा यह मरुय गगन में झण्डा नित्य हमारा।
आजादी मिल गई हमारी, मिला स्वराज हमारा है।।
केसरिया, उज्ज्वल, हरियाला, विजय तिरंगा प्यारा है।।

नील चक्र है मध्य निराला, विश्व क्रान्ति का नाग है।।
आगे -आगे कदम बढाये, बढना काम हमारा है।
आजादी मिल गई हमारी, मिला स्वराज हमारा है।।[५]

भारत के नवयुवकों को आहवान करते हुए कवि कविता के माध्यम से जीवन में संघर्ष करते हुए आगे बढने की प्रेरणा देते है। उनकी सोच है कि सभी युवाओं को देश की प्रगति के लिए जोश के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। वे लिखते हैं कि-

समय अनमोल बढो, नव जवानों।
कायरता, दुर्बलता छोडो, छोडो आलस भाई
मुक्त बनी अब भारत माता, नवल सन्देशा लाई।[६]

कवि युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए आहवान करते है कि स्वराज्य सोने की परातों में नहीं मिलता। उसकी प्राप्ति के लिए कुरबानियाँ देनी पडती है। राष्ट्रीय चेतना के स्वर उनकी कविताओं में दिखाई पडते हैं-

स्वतंत्रता संग्राम छिड गया मॉरीशस में आज महान,
मांग रहा है इस धरती से तन, मन, धन, जन का बलिदान ।
जीते सकल स्वराज मिलेगा स्वर्ग मिलेगा मर मर के।
दोनों ही तो सुखकारी हैं लडो जवानों डटकर के।[७]

राष्ट्रकवि ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर' जी भारत और मॉरीशस दोनों देशों से समान प्रेम करते थे।
वे दोनों देशो की संस्कृति को एक मानते थे। दोनों देशों की भाषा भी एक हिन्दी ही है सभी लोगों का रहन-सहन एवं जीवन पध्दति भी एक सी है। धर्म एवं कर्म में समानता देखते हुए कवि कहते हैं कि-

मॉरीशस छोटा भारत है सुन लो मेरे भाई।
युग-युग से ही उत्तम शिक्षा हम लोगों ने पाई।।
सत्य अहिंसा के ही बल पर उसने ली आजादी।
स्वतंत्रता की वीणा घर-घर हमने आज बजा दी।।[८]

'मधुकर' जी ने दोनों देशों की संस्कृति को भी एक ही माना है। वे मॉरीशस को छोटा भारत मानते हैं। समस्त संसार की संस्कृति का जनक वे भारत को ही मानते हैं। भारत को पिता का स्थान व गंगा को माता का दर्जा देते हुए कवि कहते हैं कि-

भारत में रेल-गाडियां नई-नई नित बनती।
मॉरीशस की बडी चिमनियों शक्कर चाय उगलत।।
औषधि भारत में है बनती अस्पताल हैं बनते।
मॉरीशस में बिजलियां बनती शिक्षालय हैं बनते।।
सत्, शिव, सुन्दरता की धारा भारत से हैं आई,
हिन्द महासागर का तारा मॉरीशस है भाई।।
सुन्दर भारत पिता हमारा, गंगा जी हैं माता।
सकल विश्व की संस्कृति धारा, असली भाग्य विधाता।।
जय जय भारत देश सदा हो, उडे ऊँचा झण्डा।
मॉरीशस की विजय सदा हो, 'मधुकर' झुके न झण्डा।।[९]

कवि ने माना है मॉरीशस में हिन्दू धर्म भारतीयों के लिए अपनी पहचान और अस्तित्व से जुडा है। वह उनकी आत्मा और जीवन का अंश है, इसलिए कवि बार-बार गणेश, सरस्वती, दुर्गा, राम, कृष्ण आदि देवी-देवताओं की स्तुति करता है और मकर

संक्रान्ति, होली, रक्षा-बन्धन, गंगा-स्नान, दीवाली आदि त्यौहारों की महत्ता बताते हुए हिन्दुओं को जागृत करता है। "दीवाली संदेश तुम्हारा" कविता में कवि कहता है कि-

जाग – जाग रे हिन्दू भाई महानींद से जाग,
व्देष, दुश्मनी कायरता को अपने दिल से त्याग।
हिन्दी के मन्दिर में दुश्मन लगा रहे आग,
हिन्दू संस्कृत के खूनों से खेल रहे हैं फाग।।
दीवाली का संदेशा सुन लो वीर जवान ।
धूल मिला दो किला दुश्मन का, देकर अपनी जान।
देवों का वरदान है हिन्दू जन जीवन कल्याण है हिन्दू।।[१०]

भारतीय संस्कृति के महत्व को दर्शाते हुए "होली का संदेश"

कविता के माध्यम से कवि लिखते हैं कि –

सारी दुनिया को देती है होली शुभ संदेश,
परहित पथ पर चलते रहना हरना हरिजन क्लेश।
हरकर हरिजन क्लेश निभाना वादा वचन नरेश,
साथ तुम्हारा देंगे हरदम ब्रम्ह-विष्णु-महेश ।।[११]

कवि ने 'प्रबोधिनी एकादशी' कविता में भारतीय संस्कृति की छाप छोडते हुए कहा है कि-

सकल व्रतों में है धवल प्रबोधिनी एकादशी,
कल्याण-कारिणी विमल प्रबोधिनी एकादशी,
विष्णु सुता सुहागिनी प्रबोधिनी एकादशी
अमृत पिला रही सदा कृपालिनी एकादशी।
वरदायिनी एकादशी, प्रबोधिनी एकादशी ।।[१२]

मानवता की अभिव्यक्ति कवि के व्दारा 'हम मॉरीशस सो पुरसॉ हैं' कविता में दिखाई पडती है। कवि का हिन्दूपन इतना महान है कि, वह पहले इन्सान बनना चाहता है। कवि कहता है-

मॉरिशस पर जाँ कुरबाँ है। हम मॉरीशस पुरसों है।
सबसे पहले हम इन्सॉ है, पीछे हिन्दू मुसलमॉ है।
यहाँ हमारी गंगा जमुना, मान सरोवर भी अपना है।
काबा काशी यहीं हमारा, पावन धाम सफल सपना है।
इसकी आजादी झण्डे पर, लडना मरना भी सपना है।[१३]

'मधुकर' जी की संवेदनाओं में नवीनता और मौलिकता भी मिल जाती है। कवि अपने समय के साथ चलता है और समय को अपने साथ चलाना चाहता है, जिसके मूल में मॉरीशस और भारत प्रेम के साथ मानव प्रेम भी है। यह मानव-प्रेम उसके मानवता का मंत्र देता है-

मन्दिर, मठ, गिरिजा, मस्जिद में, मानवता मंत्र सुनायेंगे,
दानवता-स्वास्थ्य-आग बुझा, हम प्रेम-मिलन अपनायेंगे,
हिंसा के भूत भगायेंगे, नित शान्ति –दूत कहलायेंगे,
कल्याण मार्ग दिखला करके, मानव के भाग जगायेंगे।।[१४]

'मधुकर' जी जन-कवि है। उनका काव्य संसार व्यापक है। वे सबका मंगल चाहते है। 'मधुकर दोहावली' कविता में कवि नैतिक मूल्यों का समर्थन करते हुए जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालते है। वे लिखते हैं कि-

समय, मौत, ग्राहक कभी न ठहरते तीन।
फोन पर मिलते नहीं सुनिये मित्र प्रवीण।।
निकली बात जुबान से निकले धनु से बाण।
लौट न सकतें फिर कभी तन से निकले प्राण।।
जगती-तल में मातु-पिता और जवानी चार।
तीनों मिलते जीवन में मनुज को इक बार।।
उन्नति जग में होत है करने से सतकाम।
ऱ्हदय लगाने से सदा विद्या, श्रम, हरि नाम।।[१५]

सारांश में कवि ने राष्ट्र-प्रेम, हिन्दू-प्रेम, हिन्दी प्रेम, मानवता प्रेम, दोनों देशों की संस्कृति से प्रेम आदि को अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकट किया है। 'मधुकर' जी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न पक्षों को हम बहुत ही मार्मिक ढंग से देख सकते है। उनकी ६५-७० वर्ष की निरन्तर काव्य-साधना उनकी अद्‌भुत सर्जनात्मक क्षमता की प्रमाण है। उन्होंने अपनी अन्तिम सांसों में भी देश, हिन्दू-धर्म, हिन्दू-जाति और हिन्दी भाषा की चिन्ता की है। मॉरीशस, हिन्दुस्तान, हिन्दू और हिन्दी के लिए ही मधुकर जी जीवित रहे और इन्हीं के उदार एवं उत्कर्ष के लिए आजीवन प्रयासरत रहे। कवि ने देश-प्रेम को सर्वोच्च स्थान पर रखा तथा आजीवन राष्ट्र-प्रेम से अभिभूत होकर रचनाएँ लिखते रहें। राष्ट्रकवि ब्रजेन्द कुमार भगत 'मधुकर' जी ने मॉरीशस में हिन्दी कविता को जीवन से जाडा और देशकाल के अनुकूल कविता की रचना की। जिस कारण मॉरीशस के हिन्दू समाज की नयी रुचि और नयी भावना और नये विचारों का प्रतिबिम्ब कविता में आ सका।

सन्दर्भ

१. ब्रजेन्द कुमार भगत 'मधुकर', काव्य रचनावली, पृ० ५३
२. वही, पृ० ७०
३. वही, पृ० ६९
४. वही, पृ० ४३
५. वही, पृ० ४४
६. वही, पृ० ४६
७. वही, पृ० १२६
८. वही, पृ० १५०
९. वही, पृ० १५०
१०. वही, पृ० ४११-१२
११. वही, पृ० ४१०
१२. वही, पृ० ४११
१३. वही, पृ० ४३१
१४. वही, पृ० ४६८
१५. वही, पृ० २६८